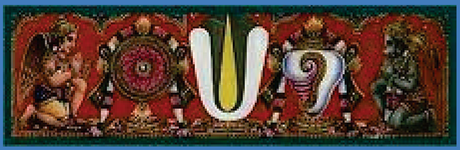

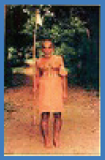

श्रीमत् वेदान्त रामानुज मुनि करुणालब्ध वेदान्त युग्मम्
श्रीमत् श्रीवास योगीश्वर गुरुपदयोर्पित स्वात्मभारम्
श्रीमत् श्रीरङ्गनाताह्वय मुनिकृपया प्राप्त मोक्षाश्रमं तं
श्रीमत् वेदान्त रामनुज मुनिमपरम् संश्रये देशिकेन्द्रम्

श्रीमत् श्रीवास योगीश्वर मुनि करुणालब्ध वेदान्त युग्मम्
श्रीमत् वेदान्त रामानुज गुरुपदयोर्पित स्वात्मभारम्
श्रीमत् श्रुत्यन्त रामानुज यति नृपतेः प्राप्त मोक्षाश्रमं तं
श्रीमत् श्रीवास रामनुजमुनिं संश्रये ज्ञानवार्धिम्

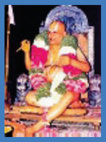

वेदान्त लक्ष्मण मुनीन्द्र कृपात्त बोधम्
तत्पाद युग्म सरसीरुह भृङ्गराजम्
त्रय्यन्त युग्म कृतभूरि परिश्रमं तं
श्रीरङ्ग लक्ष्मणमुनिम् शरणं प्रपद्ये

श्री लक्ष्मी गद्यं

shrI lakShmI gadyaM

श्री लक्ष्मी गद्यं

येकम् न्यञ्च्य नतिक्षमं मम परं चाकुञ्च्य पादाम्बुजं
मध्येविष्टर पुण्डरीकमभयं विन्यस्य हस्थाम्भुजम् ।
त्वां पस्येम निषेदुषीं प्रतिकलं कारुण्य कूलङ्कष
स्फारापाङ्ग-तरङ्गमम्ब मधुरं मुग्धं मुखं बिभ्रतीम् ॥ - श्री गुणरत्न कोशः [38]

श्रीवेङ्कटेश महिषी श्रित कल्पवल्ली - पद्मावती विजयताम् इह पद्महस्ता ।
श्रीवेङ्कटाख्य धरणी भृदुपत्यकायां - या श्रीशुकस्य नगरे कमलाकरेभूत् ॥

ओं भगवति जयजय पद्मावति हे

भागवत निकर बहुतर भयकर बहुळोद्यमयम सद्मायति हे

भविजन भयनाशि भाग्य पयोराशि वेलातिग लोल विपुल तरोल्-लोल वीचि लीलावहे

पद्मज भव युवति प्रमुखामर युवति परिचारक युवति वितति सरति सतत विरचित परिचरण चरणाम्-भोरुहे

अकुण्ठ वैकुण्ठ महाविभूति नायिकि - अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायिकि
श्रीवेङ्कटनायिकि - श्रीमति पद्मावति - जय विजयी भव

क्षीराम्भोराशि सारैः प्रभवति रुचिरैः यत्स्वरूपे प्रदीपे
शेषाण्-एषामृजीषाण्य जनिषत सुधाकल्प देवाङ्गनाद्याः ।
यस्यास्-सिंहासनस्य प्रविलसति सदा तोरणं वैजयन्ती
सेऽयं श्रीवेङ्कटाद्रि प्रभुवर महिषी भातु पद्मावती श्रीः ॥

श्री लक्ष्मी गद्यं

जय जय जय जगदीश्वर कमलापति करुणारस वरुणालय वेले

चरणांबुज शरणागत करुणारस वरुणालय मुरबाधन करबोधन सफलीकृत शरणागत जनतागम वेले

किन्चिद् उदन्चित सुस्मित भञ्जित चन्द्र-कलामद् सूचित सम्पद् विमल विलोचन जित कमलासन सकृदवलोकन सज्जन दुर्ज्जन भेद्-विलोपन लीला लोले

शोभनशीले - शुभगुणमाले - सुन्दरभाले

कुटिल निरन्तर कुन्तल माले

मणिवर विरचित मन्जुळ माले

पद्म सुरभि गन्ध मार्दव मकरन्द् फलिताकृति बन्ध पद्मिनी बाले

अकुण्ठ वैकुण्ठ महाविभूति नायिकि - अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायिकि
श्रीवेङ्कटनायिकि - श्रीमति पद्मावति - जय विजयी भव

श्रीशैलानन्तसूरेः सधवमुपवने चोर लीलां चरन्ती
चाम्पेये तेन बद्धा स्वपतिमवरयत् तस्य कन्या सती या।
यस्याः श्रीशैल-पूर्णश्-श्वशुरति च हरेस्तात् भावं प्रपन्नः
सेऽयंश्री वेङ्कटाद्रि प्रभुवर महिषी भातु पद्मावती श्रीः ॥

श्री लक्ष्मी गद्यं

खर्वी भवदति गर्वी कृत गुरु मेर्वी शिगिरि मुखोर्वी धर कुल दर्वी कर दयितोर्वी धर शिखरोर्वी फणिपति गुर्वी खर कृत रामानुजमुनि नामाङ्कित बहु भूमाश्रय सुर धामालय वर नन्दन वन सुन्दर तरानन्द मन्दिरानन्त गुरु वनानन्त केलियुत निभृत तर विहृति रत लीला चोर राज कुमार निजपति स्वैर सह विहार समय निभृतोषित फणिपति गुरु भक्ति पाश वशंवद निगृहीता राम चंपक निबद्धे

भक्त जनावन बद्ध श्रद्धे

भजन विमुख भविजन भगवद् उपसदन समय निरीक्षण सन्तत सन्नद्धे

भागधेय गुरु भव्य शेष गुरु बाहुमूलधृत बालिका भूते

श्री वेङ्कटनाथ वर परिगृहीते

श्री वेङ्कटनाथ तात भूत श्रीशैलपूर्ण गुरु गृहस्नुषा भूते

अकुण्ठ वैकुण्ठ महाविभूति नायिकि - अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायिकि
श्रीवेङ्कटनायिकि - श्रीमति पद्मावति - जय विजयी भव

श्रीशैले केलि काले मुनि सम् उपगमे या भयात् प्राक् प्रभाता
तस्यैव उपत्यकायां तदनुशुकपुरे पद्मकासार मध्ये ।
प्रादुर्भूतारविन्दे विकच दळ चये पत्युर्-उग्रैस्-तपोभिः
सेऽयंश्री वेङ्कटाद्रि प्रभुवर महिषी भातु पद्मावती श्रीः ॥

श्री लक्ष्मी गद्यं

भद्रे - भक्त जनावन निर्निद्रे

भगवद् दक्षिण वक्षो लक्षण लाक्षा लक्षित मृदुपद मुद्रे

भन्जित भव्य नव्यदर दलित दल मृदुल कोकनदमद विलसत्-अधरोर्ध्व विन्यास सव्याप सव्यकर विराजदनितर शरण भक्त गण निजचरण शरणीकरता भय वितरण निपुण निरूपण निर्निद्र मुद्रे

उल्लसदूर्ध्व तरा परकर शिखर युगळ शेखर निज मन्जीम मद भन्जन कुशल वचन विधुमण्डल विलोकन विदीर्ण हृदयता विभ्रम धरधर विदलित दल कोमल कमलमुकुल युगळ निरर्गल विनिर्गलत् कान्ति समुद्रे

श्रीवेङ्कट शिखर सह महिषी निकर कान्त लीलावसर सङ्गत मुनि निकर समुदित बहुलतर भयलसत्-अपसार केलि बहुमान्ये

श्रीशैलाधीश रचित दिनाधीश बिम्ब रमाधीश विषय तपोजन्ये

श्रीशैलासन्न शुकपुरी सम्पन्न पद्मसर उत्पन्न पद्मिनी कन्ये

पद्म-सरोवर्य रचित महाश्चर्य घोर तपश्चर्य श्रीक मुनिधुर्य कामित वदान्ये

मानव कर्मजाल दुर्मल मर्म निर्मूलन लब्ध वर्ण निज सलिलज वर्ण निर्जित दुर्वर्ण वज्र स्फटिक सवर्ण सलिल संपूर्ण सुवर्ण मुखरी सैकत सन्जात सन्तत मकरन्द बिन्दु सन्दोह निष्यन्द सन्दानिता मन्दानन्द मिलिन्द वृन्द मधुरतर झङ्कार खरुचिर सन्तत सम्फुल्ल मल्ली मालती प्रमुख व्रतति वितति कुन्द कुरवक मरूवक दमनकादि गुल्म कुसुम महिम घुमघुमित सर्व दिङ्मुख सर्वतो मुख महनीया मन्दमाकन्दा विरल नारिकेल निरवधिक क्रमुक प्रमुख तरुनिकर वीधि रमणीय विपुल तटोद्यान विहारिणि

मन्जुलतर मणि हारिणी

श्री लक्ष्मी गद्यं

महनीय तर मणिजित तरणि मकुट मनोहारिणि

मन्थरतर सुन्दरगति मत्त मराळ युवति सुगति मदापहारिणि

कलकण्ठ युवाकुण्ठ कण्ठनाद् कल व्याहारिणि

अकुण्ठ वैकुण्ठ महाविभूति नायिकि - अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायिकि

श्रीवेङ्कटनायिकि - श्रीमति पद्मावति - जय विजयी भव

यां लावण्य नदीं वदन्ति कवयः श्रीमाधव अम्भोनिधिं
गच्छन्तीं स्ववशं गतांश्च तरसा जन्तून्-नयन्तीमपि ।
यस्या मानन नेत्र हस्त-चरणाद्यङ्गानि भूषारुची
अंभोजान्य मलोज्ज्वलंच सलिलं सा भातु पद्मावती ॥

श्री लक्ष्मी गद्यं

अम्भोरुहवासिनि - अम्भोरुहासन प्रमुखाखिल भूतानुशासिनि

अनवरतात्मनाथ वक्षः सिंहासन अध्यासिनि

अङ्घ्रियुगावतार पथ सन्तत सङ्गाहमान घोरतरा भङ्गुर संसार धर्म सन्तप्त मनुज सन्ताप नाशिनि

बहुल कुन्तल वदन मण्डल पाणि-पल्लव रुचिर लोचन सुभग कन्धरा बाहु वल्लिका जघन नितम्ब मण्डल-मय वितत शैवाल सम्फुल्ल कमल कुवलय कम्बुक-मलिनी नालोत्तुङ्ग विपुल पुलिन शोभिनि

माधव महार्णव गाहिनि - महिल्त-आवण्य महा वाहिनि

मुख चन्द्र समुद्यत भालतल विराजमान किन्चित-उदन्चित सूक्ष्माग्र कस्तूरी तिलक शूल समुद्भूत भीति विशीर्ण समुज्झित संमुख-भाग परिसर युगळ सरभस विसृमर तिमिर निकर सन्देह सन्दायि ससीमन्त कुन्तल कान्ते

स्फटिक मणिमय कन्दर्प दर्पण सन्देह सन्दोहि सकल जन संमोहि फलफल विमल लावण्य ललित सतत मुदित मुदित मुख मण्डले

महिम म्रदिम महिम मन्दहासा सहिष् णु तदुदय समुदित क्लमोदीर्णारुण वर्ण विभ्रमद् विडम्बित परिणत बिम्ब विद्रुम विलसदोष्ठ युगळे

परिहसित दरहसित कोकनद कुन्दरद मन्दर तरोदुगत्वर विसृ त्वर कान्ति वीचि कमनीयामन्द मन्दहास सदन वदने

समुज्ज्वल तरमणि तर्जित तरणि ताटङ्क निराटङ्क कन्दलित कान्तिपूर करम्बित कर्ण शष्कुली वलये

बहिरुप गतस्फुरणाधि गतान्तरङ्गण भूषणगण वदन कोश सदन स्फटिक मणिमय भित्ति

श्री लक्ष्मी गद्यं

शङ्खाङ्कुरण चण प्रतिफलित कर्णपूर कर्णावतंस ताटङ्क कुण्डल मण्डन निगनिगायमान विमल कपोल मण्डले

निज भ्रुकुटी भटी भूत त्र्यक्ष अष्टाक्ष द्वादशाक्ष सहस्राक्ष प्रभृति सर्व सुपर्व शोभन भ्रूमण्डले

निटल फलक मृग मद तिलकच्छल विलोक कलोक विलोचन दोष विरचित विदलन वदन विधुमण्डल विगळित नासिका प्रणालिका निगूढ विस्तृत नासाग्र स्थूल मुक्ता फलच्छलाभि व्यक्त वदन बिल निलीन कण्ठनालि कान्तः प्रवृत्त ग्रीवा मध्योच्च भागकृत विभाग ग्रीवागर्त विनिस्सृत पृथुल विलसदुरोज शैलयुगळ निर्झर झरीभूत गंभीरनाभि ह्रदावगाढ विलीन दीर्घतर पृथुल सुधाधारा प्रवाह युगळ विभ्रमाधारा विस्पष्ट वीक्ष्यमाण विशुद्ध स्थूल मुक्ताफल माला विद्योतित दिगन्तरे

सकलाभरण कला विलासकृत जङ्गम चिरस्थायि सौदामनी शङ्काङ्कुरे

कनक रशना किङ्किणी कल नादिनि - निज जनता गुण निजपति निकट निवेदिनि

निखिल जना मोदिनि - निजपति संमोदिनि - मन्थर तरमेहि - मन्दमि मम वेहि

मयिमन आधेहि - मम शुभमस्येहि - मङ्गळ मयि भाहि

अकुण्ठ वैकुण्ठ महाविभूति नायिकि - अखिलाण्ड कोटि ब्रह्माण्ड नायिकि
श्रीवेङ्कटनायिकि - श्रीमति पद्मावति - जय विजयी भव

जीयाच्छ्री वेङ्कटाद्रि प्रभुवर महिषी नाम पद्मावती श्रीः
जीयाच्चास्याः कटाक्षामृत रस रसिको वेङ्कटाद्रेरधीशः ।
जीयाच्छ्रीवैष्णवाली हत कुमतकथा वीक्षणैरेतदीयैः
जीयाच्च श्रीशुकर्षैः पुरमनवरतं सर्व सम्पत्सवृद्धं ॥

श्रीरङ्गसूरिणेदं श्रीशैलानन्तसूरि वंश्येन । भक्त्या रचितं गद्यं लक्ष्मीः पद्मावती समादत्ताम् ॥